Chapter-9

नवम-अध्याय

उपसंहार

"वह हिन्दी-गद्य के पितामह थे और काव्य-कौमुदी के सुधाकर । वह पुरोधा आचार्य थे और एक कुशल उपदेशक । वह विनम्र भक्त, सहृदय कवि, निष्णात कलाविद् तथा व्रजभाषा-साहित्य के क्षेत्र में एक इतिहास पुरुष थे ।"

व्रजभाषा ने हिन्दी-साहित्य को गौरवान्वित किया है तो गोस्वामी हरिराय जी ने व्रजभाषा को गौरवान्वित किया है ! व्रजभाषा के सात शताब्दी के दीर्घकालिक इतिहास में गोस्वामी हरिराय जी जैसी प्रांजल प्रज्ञात्मक-चेतना से संपृक्त अन्य व्यक्तित्व दिखाई नहीं देता है, जिसने अपनी १२५ वर्ष की आयु में लगभग २५०ग्रन्थों का प्रणयन किया हो ।

गोस्वामी हरिराय जी व्रजभाषा के एक मनीषी साहित्यकार थे । कविता और गद्य दोनों क्षेत्र में उन्हें दक्षिता प्राप्त थी । व्रजभाषा गद्य के आदि निर्माताओं में उनका शीर्षस्थ स्थान है । उनके द्वारा लिखे गये भावना तथा वार्ता ग्रन्थ अत्यन्त प्रसिद्ध हैं । व्रजभाषा में लिखा गया उनका पद साहित्य जहां भाव-सम्पदा से सम्पन्न है, वहां कलागत गरिमा से भी पूर्ण आप्लावित है । गोस्वामी हरिराय जी का कवि के रूप में सर्व-प्रथम परिचय, श्री प्रभुदयाल जी मीतल ने उनके सात सौ पदों को सम्पादित करके प्रस्तुत किया था । प्रस्तुत प्रबंध के शोध-पथ में गोस्वामी हरिराय जी के और भी अनेक ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं, जिनसे उनकी चतुर्दिक्-प्रतिभा का प्रकाशन होता है ।

गोस्वामी हरिराय जी का जीवन उनकी युग-प्रदत्त परिस्थितियों से पर्याप्त प्रभावित रहा था, इसका स्पष्टीकरण श्रीनाथ जी के देव विग्रह को व्रज से मेवाड़ ले जाने के प्रसंग से ही हो जाता है। इसी कारणवश गोस्वामी हरिराय जी को सिमनोर में ही रहकर अपनी उत्तर-अवस्था व्यतीत करनी पड़ी। गोस्वामी हरिराय जी अपने चरित्र के धनी थे। सम्प्रदाय के आचार्य होने के कारण वह वैष्णवों में पूज्य थे। अपने पदानुकूल उनमें योग्यता थी, प्रवचन करने में वे विशेष दक्ष थे।

गोस्वामी हरिराय जी के जीवन का सांध्यकाल उनकी भक्ति-भावना में अधिक निमग्न रहा था। उनके आध्यात्मिक विचार भी उनके व्यवहारगत जीवन को प्रभावित किए हुए थे। गोस्वामी हरिराय जी अपनी वृद्धावस्था में विप्रयोग का ही अनुभव करते रहते थे। भगवान् के विछोह का चिर अनुभव उनके मानसिक विचारों को उद्वेग की चरमसीमा तक ले गया था।१

गोस्वामी हरिराय जी ने अपनी 'छाप' में 'रसिक' शब्द का भी सार्थक प्रयोग किया था। 'रसोवैस:' के अनुरूप कृष्ण के रसात्मक-स्वरूप को पुष्टि-मार्ग में प्रधानता दी गई है। इस मार्ग को रस का मार्ग भी कहा जाता है। इस प्रसंग में 'रसिक' शब्द कवि की रस-ग्राहक प्रज्ञा का ही समर्थन करता है।

पद्य-साहित्य में उन्होंने मुक्तक-पद ही अधिक लिखे हैं, तथापि कुछ रचनायें आख्यानक भी हैं। उन्होंने अपनी प्रतिभा-सम्पन्न लेखनी से मौलिक विचारों का भी प्रतिपादन किया है। यह रूप उनकी 'गोवर्द्धन लीला', 'दामोदर लीला' आदि के विवेचन से स्पष्ट किया जा चुका है।

---

(१) श्री हरिराय जी नूं आख्यान (गुजराती), - पुरुषोत्तमदास त्रिभुवनदास कवि, नड़ियाद, पृष्ठ- २० ।

चरित्र-चित्रण के सम्बन्ध में गोस्वामी हरिराय जी ने राधा और कृष्ण के लोक-विश्रुत स्वरूप को ही ग्रहण करके उन्हें अपने स्वच्छन्द विचारों से अभिमंडित कर दिया है। अन्य कृष्ण-भक्त कवियों की भाँति उनके कृष्ण अपने दैवत्व का ढ़िढोरा पीटते दृष्टिगत नहीं होते। वे मानवीय धरातल पर मानवतुल्य वातावरण की सृष्टि करने में ही अधिक रुचि रखते हैं। 'गीता' के कृष्ण की भाँति उनके कृष्ण कर्म की महत्ता स्पष्ट करते हुए कर्मठ भी हैं और उपदेशक भी।

कवि स्वयं एक साधारण मानव है। अत: उसकी कल्पना-शक्ति भी मानवीय धरातल के वातावरण में ही गठित हुई है, यही कारण है कि श्रृंगार के स्थूलतम चित्र प्रिय के प्रति अपनी एक-निष्ठता के कल्पना चित्र ही हैं। रीति-कालीन कवियों की भाँति उनके नायक-नायिका न तो लौकिक ही हैं और न ही प्रदर्शन-वृत्ति में रुचि ही रखते हैं।

गोस्वामी हरिराय जी के श्रृंगार काव्य में रीतिकालीन काव्य-परम्परा का किंचित ही संकेत मिलता है, अन्यथा पूर्ववर्ती भक्त कवियों ने उन्हें पर्याप्त प्रभावित किया है। रीति-कालीन नर-गुणगान करने वाले युग में भी अपने भक्तिभावों पर दृढ़ रह कर कृष्ण की लीला में निमग्न रहना गोस्वामी हरिराय जी जैसे एक-निष्ठ भक्त कवि का ही सामर्थ्य कहा जा सकता है।

कृष्ण-गुणगान के अतिरिक्त गोस्वामी हरिराय जी ने 'विप्रचरित्र', व 'राज चरित्र' में अपने युग की परिस्थितियों को भी चित्रित किया है, जिसमें समाज के अवगुणों की खुलकर भर्त्सना की गई है। तत्कालीन मुगल सम्राटों के प्रति खुले शब्दों में आलोचना करना उनके साहस का प्रबल परिचायक है, औरंगजेब के प्रति उन्होंने लिखा है :-

पहले नृपति मनोरथ करि करि दान विप्रकुल दीने ।
सेवन करि करि विप्र वरन कौ, जनम सुफल करि लीने ।
अबके नृप अपने ही आगे, विप्रन नगर कटावैं ।
'रसिकराय' या कलि की महिमा मोपैं बरनि न आवै ।।

+ + + + +

जिन्हीं वंश पहिले नृप दुजजन, दान अनेकन दीने ।
भूमिदान, गजदान, दानहय, अन्नदान शुभ कीने ।
तिन्हीं वंश अब नृपति, विप्रकुल मारि-मारि विलखावैं ।
'रसिकराय' या कलि की महिमा, मो पैं बरनि न आवै ।।

ब्राह्मणों के कर्त्तव्य-च्युत स्वरूप का भी उन्होंने स्पष्ट वर्णन किया है । समाज की विकृतियों की भाँति उन्हें पारिवारिक उद्दंडता भी अरुचिकर लगती थी, इसीलिए उन्होंने अपने वंशधरों के कृत्यों का भी नि:संकोच वर्णन किया है । यह सब कवि की स्वच्छन्द व साहसिक अभिव्यक्ति के द्योतक हैं ।

हिन्दी साहित्य को गोस्वामी हरिराय जी की सबसे महान देन उनका वार्ता-साहित्य है । उन्होंने वार्ता-साहित्य के माध्यम से व्रजभाषा-गद्य के जिस सुष्ठु रूप की प्रतिष्ठा की वह अपने में अप्रतिम ही रहा । व्रजभाषा गद्य में ग्रन्थ प्रणयन का सर्वप्रथम सूत्रपात गोस्वामी हरिराय जी द्वारा ही सम्भव हुआ । इससे पहले गोस्वामी गोकुलनाथ जी का नाम भी लिया जाता रहा है, किन्तु वस्तुत: गोस्वामी गोकुलनाथ जी ने व्रजभाषा गद्य में किसी भी ग्रन्थ का स्वयं सृजन नहीं किया, वह एक कुशल उपदेशक थे, उनके उपदेशों अथवा प्रवचनों को उनके अनुयायीगण लिपिबद्ध कर लिया करते थे, जो 'वचनामृत' नाम से जाने जाते हैं । इससे सर्वथा इतर गोस्वामी हरिराय जी ने व्रजभाषा-गद्य में स्वतंत्र ग्रन्थों का प्रणयन कर अपने विचारों को व्यवस्थित रूप में गठित किया । इस संदर्भ में उन्होंने अपने पूर्वज आचार्यों के वचनामृतों का भी सदुपयोग किया था, जिसका उन्होंने यत्र-तत्र उल्लेख भी किया है ।

आज भी गुजरात और महाराष्ट्र जैसे अहिन्दी-भाषी प्रदेश में वार्ता-साहित्य का पठन-पाठन वैष्णव समाज में गौरव का विषय बना हुआ है। इससे ज्ञात होता है कि ब्रजभाषा गद्य के प्रसार में गोस्वामी हरिराय जी ने जो योग दिया वह हिन्दी भाषा प्रचार की दृष्टि से आज भी अपना अतुल महत्व प्रतिपादित करता है।

गोस्वामी हरिराय जी एक भक्त पहले थे, और कवि बाद में। कविता में उन्होंने अपनी भक्ति भावना को मूर्धन्य स्थान दिया है। सम्प्रदाय के आचार्य होने पर भी उनमें भक्ति-भावना जन्य नम्रता विद्यमान थी। वह वैष्णवों की चरणधूल को भी अपने मस्तक पर रखने में झिझकते नहीं थे। --

हौं बारी इन वल्लभियन पर ।
मेरे तन को करौं बिछौना, शीस धरौ इन चरनन तर ।

भक्ति का श्रोत उनकी काव्य-धारा में सर्वत्र विद्यमान है। भक्ति के प्रति निष्ठा और श्रृंगार के प्रति रुचि उनके अधिकांश काव्य में देखी जा सकती है। उन्होंने कविता को रीतिकालीन कवियों की भांति साध्य नहीं माना, वरन् यह तो उनके लिए एक साधन था जो उनके भावों को आराध्य के चरणों तक पहुंचा सके।

उनके साहित्य में कला के सभी उपकरण अनायास ही स्वाभाविक रूप में आ जुड़े हैं, यह उनकी भाव-प्रवणता की सूक्ष्म अभिव्यक्ति का ही परिणाम था। कला-प्रदर्शन की न तो उनकी वृत्ति थी और न हीं उन्होंने इसके लिए विशेष यत्न ही किया था।

गोस्वामी हरिराय जी का अधिकांश साहित्य पुष्टि-मार्गीय सिद्धान्तों की एक निश्चित परिसीमा में आबद्ध है, यही कारण

है कि इसमें प्रदत्त वर्णवृत्त को सामान्य पाठक ठीक-ठीक नहीं समझ पाते । उनके समग्र साहित्य के अध्ययन के लिए आवश्यक है कि पाठक को पुष्टि-मार्गीय सिद्धान्तों का पर्याप्त ज्ञान हो और वह गोस्वामी आचार्यों के व्यावहारिक आचरणोंसे भी परिचित हो । उदाहरण के लिए गोस्वामी हरिराय जी के काव्य तथा गद्य में कुछ ऐसे विशेष शब्द प्रयुक्त हुए हैं, जिनका अर्थ सम्प्रदाय के दैनिक व्यवहार का अध्ययन किये बिना नहीं जाना जा सकता, यथा --

कर तबकरी धरत हैं आगे, रुचि सौं लेत कन्हैया ।

यहाँ तबकरी शब्द सम्प्रदाय में प्रयुक्त विशेष शब्द है । श्री प्रभुदयाल जी मीतल ने इसका अर्थ 'बच्चों के लिए बनाई गई एक स्वादिष्ट छोटी रोटी' बताया है[1] और डा० हरिहरनाथ टण्डन ने तबकरी शब्द का अर्थ खिलौना माना है[2]। वस्तुत: तबकरी एक छोटी थाली अर्थात् तस्तरी का ही पर्याय है ।

सम्प्रदाय की एक निश्चित प्राचीर में बँधे हुए भी उन्होंने अपने काव्य में यथाशक्य, युगीन परिस्थितियों का परिचय देते हुए एक सीमा में उनका प्रभाव भी ग्रहण किया है । उनकी भाषा में उर्दू, फारसी के शब्दों का प्रयोग परिस्थिति जन्य ही है । इसके अनन्तर खड़ी-बोली के अनुरूप भी क्रिया-पदों का प्रयोग उन्होंने कुशलता से किया है, जो उस युग के लिये महत्व की बात थी । एक उदाहरण द्रष्टव्य है :-

तू बनरा रे बनि बनि आया,
मो मन भाया -सुख उपजाया ।
अति उतंग नीली घोड़ी चढ़ि, धरि सिर सेहरा,
अति सुन्दर अंग सुगंध लगाया ।

---

(१) देखिये-- गो० हरिराय जी का पद साहित्य, प्रकाशित, पृष्ठ- ४७ ।
(२) देखिये-- वार्ता साहित्य एक बृहद् अध्ययन- डा० हरिहरनाथ टंडन, पृ० ३८१ ।

अपने संग सकल जन सोहे, तिलक लिलार बनाया ।
'रसिक-प्रीतम' बलिहारी जाऊँ, उठि हँसि अंग लगाया ।१

गोस्वामी हरिराय जी के इस प्रकार के प्रयोगों से ज्ञात होता है कि उनके पूर्व खड़ी बोली की एक पुष्ट-परम्परा अवश्य रही होगी । गोस्वामी हरिराय जी के ये प्रयोग एक विकास विन्दु के परिणाम हैं । इससे यह भी ज्ञात होता है कि साहित्य में खड़ी बोली का स्वरूप अपनी परिष्करण-सीमा में अधिष्ठित हो चुका था ।

इसी प्रकार फारसी भाषा के शब्दों से युक्त तथा खड़ी बोली के अनुरूप एक और रचना प्रस्तुत है :-

तुमकै तो न आवे दया, उनने खाना छोड़ दिया,
भया रहे चाकर हर रोज तेरे द्वार का ।
देखन की करे चाह, फिरे तेरी गाह-गाह .
नैंकु हू न करे उर मन हू में मार का ।
सबसों निसंक बोले मन की न बात खोले ;
करे नहीं संक, जिसे सोच न विचार का ।
आशिक 'रसिक' प्यारे महबूब देखे बिन,
डोले घर बह्या बार का न पार का ।।२

आशिक, महबूब, यार जैसे शब्दों का प्रयोग उनके युग के प्रचलन और प्रभाव के ही द्योतक हैं । इसी प्रकार 'दिल-जानी मेरी बाँह गहो' में 'दिल-जानी' शब्द मुस्लिम संस्कृति का भाषा पर प्रभाव स्पष्ट करता है ।

---

(१) गोस्वामी हरिराय जी का पद साहित्य, प्रकाशित, पद संख्या- ११५ ।
(२) चौरासी कवित्त, संख्या- ५८ ।

गो० हरिराय जी ने अनेक टीका ग्रंथ लिखे हैं । यह प्रभाव उनकी स्वतंत्र रचनाओं में भी देखा जा सकता है । कहीं-कहीं उन्होंने गद्य-साहित्य में स्वयं के पद भी उद्धृत किए हैं, और उनकी व्याख्या भी प्रस्तुत की है, इससे कवि का मूल अभिप्राय स्पष्ट होता है । उदाहरण के लिए उनका एक पद और उसकी व्याख्या गोस्वामी हरिराय जी के शब्दों में ही द्रष्टव्य है :-

'कीर्तन -- सो सावन आयो, सैन काम की लायो ।
चलो सखी झूलिए सुरति हिंडोरे, कीजें लालन मन भायो ।
हाव-भाव के खंभ मनोहर, कचधन गगन सुहायो ।
काम नृपति वृखभान नंदिनी 'रसिकराय' वर पायो ।

या कीर्तन में भाव तो अत्यन्त गुप्त है । योगेश्वर के चिंतन कूं योग्य हैं । योगेश्वर के से भक्ति भाव सहित जिनके हृदय और अनन्यता और कामादिकन की आसक्ति नहीं । एसैन यह भाव सुनिवे कूं योग्य हैं । यह भाव तो गुप्त है, श्री नन्दकुमार की अनिवर्तनीय लीला है ।'१

इसी के अनुरूप एक अन्य उद्धरण भी प्रस्तुत है :-

'सो ललिता जी को भाव यह कीर्तन में जाननो ---
(राग केदारो)

हँसि हँसि दूध पीवत नाथ ।
मधुर कोमल बचन कहि कहि, प्रानप्यारी साथ ।
कनक कटोरा भर्यो अमृत, दियो ललिता हाथ ।
लाड़िली अचवाय पहिले, पाछे आप अघात ।
चिंतामन चित्त बस्यो सजनी, निरखि पिय मुसिकात ।
स्यामा-स्याम की नवल छवि पर 'रसिक' बलि बलि जात' ।

याको यह भाव है, जो --- दोऊ सरूप रतन खचित सज्या ऊपर बिराजे हैं, तहाँ ललिता जी कनक कटोरा में दूध औटि के मिश्री सुगंध डारि लै आईं । तब

---

(१) पुष्टि दृढ़ाव, सम्पा० श्री निरंजनदेव शर्मा, मथुरा, पृष्ठ- १० ।

ललिता जी ने विचार कियो, जो दोऊ सरूप विराजे हैं तातें पहले मैं श्री स्वामिनी जी के हाथ में दउंगी तो श्री ठाकुर जी कौं पान कराय के पान करेंगी। तहां मनोरथ सिद्ध न होयगो। तातें श्री ठाकुर जी के हाथ में दउंगी, तब पहले पान श्री स्वामिनी जी करेंगीं। ताते दूध को कटोरा श्री ठाकुर जी के हाथ में दियो। तब 'लाड़िली अचवाय पहलें पाछें आप अघात'। काहे तें उनके हाथ सौं वे आरोगे। उनके हाथ सौं चिन्तामनि रूप श्री ठाकुर जी श्री स्वामिनी जी के हृदय में हैं वे आरोगे। ताते श्री स्वामिनी जी के हृदय में हैं वे आरोगे। ताते स्वामिनी जी के पान किये ते श्री ठाकुर जी तृप्त होत हैं। या प्रकार की ललिता जी की प्रीति चातुर्य देखि कैं श्री ठाकुर जी मुसिकाने। यह नवल छबि दूध पान करिवे के समय की शोभा ऊपर में (श्री हरिराय जी) बलिहारी जात हौं।१

गोस्वामी हरिराय जी ने अपने पद की उपर्युक्त व्याख्या करके अपने विचारों को स्पष्ट किया है; उन्होंने यत्र-तत्र अपनी श्रृंगारिक रचनाओं की दार्शनिक पृष्ठ-भूमि स्पष्ट करते हुए भी अपने विचार प्रस्तुत किये हैं :-

'मन मेरौ तारेन बसै अरु अंजन की रेख।
चोखी प्रीत हिये बसै, याते सांवल भेख ।।२

इसी पद के अनुरूप उनके विचार अन्यत्र इस प्रकार व्यक्त हुए हैं :-

" श्री ठाकुर जी मूल तो श्री स्वामिनी जी के जैसे गौर बरन हैं परन्तु जो स्याम स्वरूप भाषत हैं सो तो श्री स्वामिनी जी के प्राकट्य पाछे उनको जो श्याम कटाक्ष महामोहिनी रूप देखि कैं श्री प्रभु जी मोहित होइ कैं अपनी देह दिसा भूल गए, अरु ऐसी अवस्था भई कीट भ्रमर की नाईं

---

(१) गोस्वामी हरिराय जी- प्रणीत चौरासी वैष्णवन की वार्ता, सम्पा० - द्वारकादास परिख, संस्करण तृतीय, पृष्ठ- ३।

(२) गोस्वामी हरिराय जी का पद साहित्य, प्रकाशित, पद संख्या- १०४।

अरु स्याम कटाक्ष के अखण्ड ध्यान में आप तद्रूप स्याम व्हे गए ।" १

गोस्वामी हरिराय जी ने इस प्रकार अनेक स्थलों पर अपने अभिप्रायों को स्पष्ट किया है । उन्होंने अपने गद्य-ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर अपने स्व-रचित पदों को उद्धृत किया है और उनकी भाव-व्याख्या भी प्रस्तुत की है । 'श्रीनाथ जी की भावना' उनका इसी प्रकार का ग्रन्थ है ।

हिन्दी के भक्ति-साहित्य के इतिहास में यह उनकी मौलिक देन थी । सम्पूर्ण भक्ति-काल में किसी भी कवि ने इस प्रकार अपनी काव्य-रचनाओं को स्वयं विवेचित नहीं किया । आत्माभिप्राय का यह प्रस्तुतीकरण उनकी अपनी उपलब्धि थी ।

उन्होंने अपने कुछ ग्रन्थों में विषय-सम्बद्ध 'भूमिका' भी लिखी हैं । 'श्रीनाथ जी की प्राकट्य वार्ता' में लिखा हुआ प्राक्कथन, उनकी इसी वृत्ति का प्रमाण है । हिन्दी के गद्य-साहित्य में इस प्रकार की 'भूमिका' का सूत्रपात भी गोस्वामी हरिराय जी से पहले दृष्टिगत नहीं होता । अत: इस संदर्भ में भी उनका नाम उल्लेखनीय है !

गोस्वामी हरिराय जी ने अपने साहित्य में परम्परा के मोहवश जहाँ भी चमत्कार लाने का यत्न किया है, वहाँ वे पूर्णत: असफल रहे हैं । कुछ प्रयोग इस विषय में देखे जा सकते हैं, यथा-

हिंडोरा री ब्रज के आँगन माच्यौ !
ब्रह्मादिक कौतुक भूले, संकर तांडव नाच्यौ
सुक सनकादिक नारद मुनिजन, हिंडोरा देखन आये
नन्द को लाल झुलावत देख्यौ बहुत तूठ हम आये

---

(१) द्विदलात्मक स्वरूप विचार- सरस्वती भंडार, काँकरोली,
- बंध संख्या- ९०७, पुस्तक संख्या- १६, पत्रा- २ ।

जुवती जूथ अटा चढ़ ठाड़ीं अपनो तन मन बारैं ।
`परमानन्द` दास कौ ठाकुर चित चोर्‌यो यह कारे ।।१

संभवत: परमानन्द दास जी के इस पद से प्रभावित होकर ही गोस्वामी हरिराय जी ने यह पद लिखा होगा :-

हिंडोरा व्रज के आंगन माच्यौ ।
वृन्दावन की सघन कुंज में संकर तांडव नाच्यौ ।
एक नाचत एक भाव दिखावत, एक गावत सुर साच्यौ ।
`रसिक प्रीतम` की बानिक निरखत महामोद मन राच्यौ ।।२

हिंडोरा वर्णन में `संकर तांडव नाच्यौ` की उक्ति गोस्वामी हरिराय जी ने सम्भवत: परमानन्द दास जी से ही प्रभावित होकर ग्रहण की होगी । इस पद में चमत्कार प्रस्तुत करने का मोह ही प्रधान कारण माना जा सकता है ।

गोस्वामी हरिराय जी ने जहाँ भी इस प्रकार के सयत्न प्रयोग किये हैं, वहाँ उनका काव्य अपने स्वाभाविक सौन्दर्य से सर्वथा पृथक् हो गया है । यह प्रभाव उनके `समस्यापूर्ति` जैसे छन्दों में भी देखा जा सकता है । कवि आलम का एक समस्या-पूर्ति का छन्द प्रस्तुत है :-

सुन्दर सजि सेज रचीकर दम्पति,
कुंज कुटी भव ऊपर री ।
कवि आलम केलि रहे विपरीत
मनोज लसे दुग दूपर री ।
सरसैं रुह आनन पैं सुमविन्दु,
परै ते यशोमति सूपर री ।

---

(१) परमानन्द सागर, डा० गोवर्द्धन नाथ शुक्ल, पद संख्या- ८५८ ।

(२) गोस्वामी हरिराय जी का पद साहित्य, प्रकाशित, पद संख्या- ३३८ ।

बरसै बरसाने की गोरी घटा,
नंदगांव के सांवरे ऊपर री ।।१

गोस्वामी हरिराय जी ने भी एक छन्द इसी समस्यापूर्ति पर लिखा है :-

रैनि अंधेरी दुराय सरुप,
चढ़ी मनौ मैन चमू पर री ।
तब सांवरी ही भई आय जुरे,
रस रूप तिया तिन हू पर री !
स्याम सजे लखि छूटी है धार,
कटाछन की पय भू पर री ।
बरसै बरसाने की गोरी घटा,
नंदगांव के सांवरे ऊपर री ।।२

तटस्थ दृष्टि से देखा जाय तो आलम का उपर्युक्त छन्द गोस्वामी हरिराय जी के इस छन्द से कहीं अधिक उपयुक्त व व्यवस्थित ज्ञात होता है । विपरीत-रति के माध्यम से अभीष्ट उक्ति की योजना दोनों में है, फिर भी आलम का छन्द इस सन्दर्भ में अधिक 'जानदार' और सार्थक है ।

इस 'समस्या' से बहुत कुछ मिलता-जुलता एक छन्द कवि ठाकुर का भी प्राप्त होता है-

अपने अपने निज गेहन में,
चढ़े दोऊ सनेह की नाव पै री ।
अंगनान मैं भीजत प्रेम भरे,
समयौ लखि मैं बलि जाव पै री ।
कह ठाकुर दोउन की रुचि सौं,
रंग ह्वै उमड़े दोउ ठांव पै री ।

---

(१) मथुरा के वर्तमान वरिष्ठ कवि श्री राजेश दीक्षित के निजी संग्रह से प्राप्त ।

(२) गोस्वामी हरिराय जी के चौरासी कवित्त, संख्या- १७ ।

सखी कारी घटा बरसै बरसाने पै
गोरी घटा नंदगांव पै री ।।१

वर्तमान कवि मुकन्द चतुर्वेदी का भी इस विषय में एक छन्द द्रष्टव्य है :-

सर सै है सरोज -मुखी सजनी,
रजनी कमनी पग नूंपर री ।
हर सै है हरी, विजुरी दमकै,
फमकै मनकार सु भूपर री ।
यों 'मुकुन्द' मनोज के चोज भरी,
विपरीत रची रति रूपुर री ।
बरसै वरसाने की गोरी घटा,
नंदगांव के सांवरै ऊपर री ।।२

उपर्युक्त सभी उद्धरणों में आलम, ठाकुर, मुकुन्द आदि के छन्द गोस्वामी हरिराय जी के इस विषय के छन्द से कहीं अधिक रोचक व व्यवस्थित जान पड़ते हैं । इससे स्पष्ट होता है कि गोस्वामी हरिराय जी ने जहाँ भी इस प्रकार के सयत्न प्रयोग किए हैं, वहाँ वह सफल नहीं हो पाये हैं । इससे इतर जहाँ भी कवि ने स्वाभाविक रूप से अपनी प्रतिभा का उपयोग किया है, वहाँ उनका काव्य निश्चय ही उत्कृष्ट बन पड़ा है ।

स्वाभाविक कथनों में भी उनकी प्रतिभा सम्पन्न लेखनी के चमत्कार देखे जा सकते हैं । उदाहरण के लिये श्रृंगार वर्णन के प्रसंग में वीरजन्य उत्साह का समन्वय कुछ दुरूह होने पर भी कितना सहज बन पड़ा है :-

विरहावस्था के चित्रण में नायिका की मनस्थिति का वर्णन ध्यातव्य है :-

---

(१) ठाकुर ठसक, सम्पादक- लाला भगवानदीन, पृष्ठ- १२ ।
(२) ब्रजभाषा के वर्तमान एक प्रसिद्ध कवि गोविन्द जी के सुपुत्र ।

लाल हौं तुम सौं बहोत लरी ।
सपुने में मोहि छांड़ि गये क्यौं, नैंक न कान करी ।
सिथिल करे मैं पेच पाग के, अलकावलि विथुरी ।
डस्यौ अधर छत किये कपोलन, चित नहिं सकुच धरी ।
विविध भांति श्रम करत समर में, अधिक उसास भरी ।
करत जुद्ध भयौ प्रगट वीर-रस सुधि बुद्धि सब विसरी ।
कहौं कहा लौं लिपटी अब लौं, बहु तै चूक परी ।
जाग परी मन में पछितानी, विरहा अगिन जरी ।
बिनती करत परत पांयनु मैं, मन मैं निपट डरी ।
करुनासिंधु 'रसिक प्रीतम' मेरौ हरौ अपराध हरी ।।१

श्रृंगार से प्रारम्भ इस पद का अन्त भी श्रृंगार के ही वातावरण में सम्पन्न हुआ है, किन्तु मध्य में उत्साह-भाव की योजना कवि ने बड़े ही सहज ढंग से प्रस्तुत की है ।

यत्न-साध्य प्रयोगों में उनके बधाई के पद, अधिक आलंकारिक छन्द, साम्प्रदायिक विशेष पर्वों के वर्णन, यथा- स्याम घटा, कसूमी घटा, हिंडोरा आदि के वर्णन अधिकांश में महत्वहीन-से हैं, किन्तु कृष्ण के बालचरित्र के कुछ वर्णन, श्रृंगारिक वर्णन आदि के स्वच्छन्द चित्र उनकी पूर्ण प्रतिभा का परिचय देते हैं ।

मध्य-युगीन प्राय: सभी कृष्ण-भक्त कवियों ने अपने-अपने पद्य-साहित्य में भिन्न-भिन्न राग-रागनियों का निबन्धन किया है । यह प्रभाव गोस्वामी हरिराय जी के काव्य में भी समाविष्ट है । इस संदर्भ में गोस्वामी हरिराय जी की यह विशिष्टता थी कि उन्होंने जहां अपने पदों में रागों को निर्दिष्ट किया है, वहां वे निर्दिष्ट राग के सम्बन्ध में प्रचुर-ज्ञान भी रखते थे । भिन्न-भिन्न रागों का उल्लेख कर उनका प्रासंगिक निर्देश करना उनकी मौलिकता थी ।

---

(१) गोस्वामी हरिराय जी का पद साहित्य, प्रकाशित, पद संख्या- ३२८ ।

एक स्थान पर उन्होंने लिखा है, ' तब सोरठि राग महाविरह को है ताकौं गाइ कैं सोरहि दिन विताये '।१ उनके पद साहित्य में भी इस प्रकार के उदाहरण प्राप्त होते हैं :-

-- मनि माला गुंजाफल गरे, गौरी राग बेनु में परे ।२
-- ऐरी सखी काफी राग जमाय, गावत तान तरंग सौं ।३
-- ब्रजनारी हिय हुलसि लेत सुर ताल अलापि मलार ।४
-- मंद मंद सुर गावत दोऊ मालव-राग मधुर सुरसारी ।५
-- गावत मिलि सारंग राग दोऊ, विकट तान उपजत हैं ता पर।६

गोस्वामी हरिराय जी ने इस प्रकार स्थान-स्थान पर विषयगत रागों का नामोल्लेख भी कर दिया है। अपने संगीत - सम्बन्धी ज्ञान को उन्होंने एक अन्य पद में निम्नलिखित रूप से व्यक्त किया है।--

सप्त सुर तीन ग्राम, इकईस मूरछना,
तान उनचास मिलि, मंडल मधि गावैं ।
चारि करन,हस्तक,सिर, नैंन भेद बहुभाँति, ।
ताल सुरन उपजति गति, नृत्य कर नचावैं ।
ता तक धिंग थौंग थौंग कुकुभ कुकुभ,
झनकिट धिनकिट धिम धिम, मृदंग बजावै ।
'रसिक प्रीतम' छवि निरखत देव जुवती मोहीं,
तन मन उमंगि उमंगि विविध कुसुम बरसत सुख पावैं ।।७

---

(१) रथयात्रा, गोस्वामी हरिराय जी कृत- पत्रा- ४ ।
(२) गोस्वामी हरिराय जी का पद साहित्य, प्रकाशित, पद संख्या- ५१३ ।
(३) वही, पद संख्या- ४६३ ।
(४) वही, पद संख्या- ४५६ ।
(५) वही, पद संख्या- ४५५ ।
(६) वही, पद संख्या- ४१६ ।
(७) वही, पद संख्या- १७० ।

उद्धृत पद से ज्ञात होता है कि गोस्वामी हरिराय जी को संगीत शास्त्र के साथ नाट्य शास्त्र का भी समुचित ज्ञान था। इस पद में प्रयुक्त करन, हस्तक, सिर आदि नाट्य शास्त्र के विशेष पारिभाषिक शब्द हैं, जिनसे नृत्य की विभिन्न मुद्राओं के संकेत मिलते हैं। आचार्य भरत के नाट्यशास्त्र में १०८ करण, ६४ हस्तक तथा ९ प्रकार के सिर संचालन का विधान वर्णित है।१ नृत्य कला के संदर्भ में उन्होंने अन्य स्थलों पर भी ऐसे ही पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया है, जिससे उनके नाट्य-शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान की पुष्टि होती है :-

-- रंग मंडल नट की ज्यों नाचत सुखदायी ।२

-- मेलु धरें नट नाचत, रंग मधि गावै, बोलत मधुरे बैन ।३

-- नृत्यत सुलप संचिनौतन गति, बहु विधि हस्तक भेद बताइ ।४

इस प्रसंग में गोस्वामी हरिराय जी की 'दानलीला' का भी उल्लेख किया जा सकता है, जो अभिनय तत्व की दृष्टि से पूर्ण सम्पन्न है, और जिसके आधार पर श्री गोकुलानन्द तैलंग, कांकरौली निवासी ने एक 'गीति-नाटिका' का सम्पादन भी किया है।

गोस्वामी हरिराय जी ने अपनी संगीत-रुचि को प्रदर्शित करते हुए कहा है कि 'नाद' का महत्व चित्र से कहीं अधिक है।--

-- दरसन रस तें अधिक नाद रस, सरस जन नि समुझावैं ।५

---

(१) 'हस्तपादसमायोगो, नृत्यस्य करणं भवेत्'-नाट्यशास्त्र, अध्याय-४, श्लोक-३०
-'अष्टोत्तरशतं ह्येतत्करणानां मयोदितं'- वही, ४-५५।
- हस्तक ६४ :-
चतुष्षष्टिकरा ह्येते नामतोऽभिहिता मया, वही- ९।१७।

(२) गोस्वामी हरिराय जी का पद साहित्य, प्रकाशित, पद संख्या- १९०।

(३) वही, पद संख्या- १८२।

(४) वही, पद संख्या- ६१३।

(५) वही, पद संख्या- १६९।

-- अपने दृग अवलोकि भाव सौं; मृगन जाति बिसरावै,
रूप देखि सुनि नाद विवस तन, हरिनी दृगन पुजावै ।१

इस भाँति गोस्वामी हरिराय जी ने शब्द के साथ-साथ स्वर की महत्ता भी प्रतिपादित की है । उनके पद साहित्य के प्रकाशित संस्करण में निम्नलिखित राग-रागनियों का प्रयोग हुआ है :-

क्रम-संख्या	राग	कुलपद-संख्या
१	अहानो	२३
२	आसावरी	२९
३	ईमन	२५
४	कनाटिक	२
५	कल्याण	२
६	काफी	५
७	कान्हरो	३६
८	केदारो	५४
९	खेमरा	१
१०	खम्माच	१
११	गौरी	३२
१२	चौपाई	१०
१३	टोड़ी	१४
१४	दादरा	१
१५	देवगंधार	२०
१६	धनाश्री	१०
१७	नट	१७

(१) गो० हरिराय जी का पद साहित्य, प्रकाशित, पद संख्या- १६९ ।

क्रम-संख्या	राग	कुल पद संख्या
१८	नायकी	२०
१९	पीलू	१
२०	पूर्वी	६
२१	पंचम	२
२२	भूपाली	७
२३	भैरव	८
२४	मल्हार	२९
२५	मारू	५
२६	मालव	१३
२७	मालकौस	३
२८	रामकली	३०
२९	रायसौ	२
३०	रुराई	१
३१	ललित	१०
३२	लावनी	१
३३	बसंत	३
३४	विभास	१४
३५	विहाग	५३
३६	विलावल	२५
३७	सूहौ	१
३८	सोरठ	५
३९	सारंग	१५०
४०	श्री	८
४१	श्यामकल्याण	२
४२	षट	१
४३	हमीर	१६

उपर्युक्त राग-रागनियों के अतिरिक्त भी कुछ और राग-रागनियों के पद गो० हरिराय जी कृत प्राप्त होते हैं। इन सभी में सारंग, विहाग, केदारो, हमीर, रामकली, आसावरी, अढ़ानो, ईमन, कान्हरो, गौरी, मल्हार आदि राग-रागनियों का ही अधिकांश में प्रयोग हुआ है।

गोस्वामी हरिराय जी ने प्राय: शास्त्रीय रागों का ही अपने पदों में निबंधन किया है। देशी-राग उनके पद साहित्य में यत्किंचित ही हैं। उपरिनिर्दिष्ट अधिकांश राग शास्त्रीय राग ही हैं।

गोस्वामी हरिराय जी के काव्य के विगत अध्ययन से जाना जा सकता है कि उनके काव्य में प्रगीत-काव्य की सभी विशेषताएं सन्निहित हैं। गेय-प्रधान उनके पद हृदय की पुनीत अनुभूतियों की सूक्ष्म व्यंजना करने में अति सफल रहे हैं। 'स्वरों के आरोह-अवरोह से काव्य में श्रुति-सुखदा का संचार होता है और स्वरों के उतार चढ़ाव का चरमोत्कर्ष राग-रागनियों में मिलता है। यही कारण है कि हृदय के कोमलतम भावों की अभिव्यंजना के लिये कवियों ने प्राय: गीत-शैली का ही आश्रय लिया है। हृदय की रागात्मिका-वृत्ति के योग से जब सुख और दुख की अनुभूति तीव्रतम होकर अनेक भावों की उमड़ती हुई धारा में समस्त पुरुषता और कलुषता का प्रक्षालन करती हुई, अकस्मात कल-कल ध्वनि से कवि के कण्ठ से फूट पड़ती है तो उसे गीत की संज्ञा प्राप्त हो जाती है।'[१] गोस्वामी हरिराय जी के काव्य में अभिप्रेत वर्ण्य-विषय से ज्ञात होता है कि उन्होंने अपने पद साहित्य में पुष्टि-मार्गीय नित्यकीर्तन को विशेष लक्ष्य किया है। नित्य के पदों में अष्ट-झांकियों के विविध पदों की रचना कर गो० हरिराय जी ने कीर्तन-साहित्य को अपना ध्येय-विषय चुना था, यही कारण है कि उन्होंने कीर्तन के अनुरूप संगीत के ताल-स्वरों में रागों को बैठाकर पदों की

---

(१) सूर और उनका साहित्य, डा० हरबंश लाल शर्मा, पृष्ठ- २८५ ।

रचना की थी, छन्द-शास्त्र के नियमों का पालन भी उनका मुख्य ध्येय नहीं था। उनके पदों में भिन्न छन्दों का निश्चित स्वरूप दिखलाई देता है, किन्तु उनका मुख्य लक्ष्य सरस कीर्तनों में भगवान का गुणगान करना ही था। कीर्तनों के माध्यम से ही कवि ने अपने सिद्धान्त, दर्शन, अनुभूति आदि को प्रकाशित किया है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि गोस्वामी हरिराय जी एक प्रतिभा सम्पन्न कवि, कुशल गद्यकार, सहृदय भक्त तथा एक महान आचार्य थे। गोस्वामी हरिराय जी ने महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के वंश में अवतरित होकर उस वंश तथा पुष्टि-मार्ग दोनों को गौरवान्वित किया है। पुष्टि-मार्ग के अनुयायियों में उनका अत्यन्त आदरपूर्ण स्थान रहा है। महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के उपरान्त गुसाईं जी तथा गोकुलनाथ जी की श्रेणी में यदि किसी विद्वान आचार्य को रखा जा सकता है तो गोस्वामी हरिराय जी को ही। गोस्वामी हरिराय जी व्रजभाषा साहित्य आकाश के एक अत्यन्त ज्योतिषमान् नक्षत्र थे, जिनसे व्रजभाषा काव्य एवं गद्य दोनों को पुष्कल प्रकाश और प्रेरणा की उपलब्धि हुई है। उनका काव्य जहाँ सरल है वहीं सरस भी। जहाँ भक्ति भावों से ओत-प्रोत है, वहीं श्रृंगार की मधुराई से मंडित भी। उनके साहित्य का अध्ययन हृदय की रागात्मिका वृत्ति को जागृत करने वाला तथा मानसिक - कालुष्य को विनष्ट करने वाला है।

अन्त में कहा जा सकता है कि भारतीय वाङ्मय के इतिहास में गोस्वामी हरिराय जी जैसी प्रखर मेधा और प्रबुद्ध लेखनी का धनी कोई भी कलाकार नहीं जन्मा, जिसने संस्कृत भाषा में साधिकार, शताधिक ग्रन्थों का प्रणयन करते हुए भी व्रजभाषा में अपना शीर्षस्थ स्थान बनाया हो।

गो० हरिराय जी व्रजभाषा गद्य के उन्नायक थे और साथ ही एक कुशल सम्पादक तथा व्याख्याकार भी। उन्होंने व्रजभाषा पद्य में भी अपनी प्रांजल-मेधा का

प्रकाशन जम कर किया था । उन्होंने गुजराती, मारवाड़ी, खड़ीबोली और राजस्थान भाषाओं में भी अपनी लेखनी को गति दी थी ।

वह हिन्दी गद्य के पितामह थे और काव्य कौमुदी के सुधाकर । वह एक प्रौढ़ा आचार्य थे और एक कुशल -उपदेशक । वह एक विनम्र भक्त, सहृदय कवि, निष्णात् कलाविद तथा व्रजभाषा साहित्य के क्षेत्र में एक इतिहास पुरुष थे ।

-
-

सहायक ग्रन्थ सूची -(हिन्दी)

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	लेखक या सम्पादक	अन्य विवरण
१-	अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय, भाग- १।२	डा० दीनदयालु गुप्त	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।
२-	अष्टछाप काव्य का सांस्कृतिक मूल्यांकन	डा० मायारानी टंडन	हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ ।
३-	अष्टछाप-परिचय	श्री प्रभुदयाल मीतल	अग्रवाल प्रेस, मथुरा ।
४-	अष्टाक्षर, ब्रज-टीका	सम्पा० श्री विट्ठल प्रसाद ,	लेखक के निजी संग्रह से ।
५-	आ० महाप्रभु जी के ८४ बैठक चरित्र ।	सम्पा० निरंजनदेव शर्मा,	बजरंग पुस्तकालय, मथुरा ।
६-	कवितावलि	गो० तुलसीदास जी	गीता प्रेस, गोरखपुर ।
७-	काव्यशास्त्र की रूप रेखा	श्री श्याम नंदन शास्त्री	सा०म० पटना ।
८-	काव्य समीक्षा	आ० गिरिजादत्त त्रिपाठी	पुस्तक भंडार, पटना ।
९-	गुजरात की हिन्दी, काव्य परम्परा और आचार्य कवि गोविन्द गिल्ला भाई ।	डा० माणिकलाल चतुर्वेदी,	भारत-प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़ ।
१०-	गुजराती और ब्रजभाषा कृष्ण काव्य का तुलनात्मक अध्ययन ।	डा० जगदीश गुप्त	हिन्दी परिषद् विश्वविद्यालय, प्रयाग ।
११-	गोविन्द स्वामी	सम्पा० श्री ब्रजभूषण शर्मा,	कांकरौली ।
१२-	गोस्वामी हरिराय जी का पद साहित्य ।	सम्पा० श्री प्रभुदयाल मीतल	अग्रवाल प्रेस, मथुरा ।

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	लेखक या सम्पादक	अन्य विवरण
१३	गो० हरिराय जी का जीवन चरित्र	एक वैष्णव	सांवली
१४	गो० हरिराय जी कृत दान-लीला काव्य-नाटिका	सम्पा० श्री गोकुलानन्द तैलंग	कांकरोली
१५	चौरासी वैष्णवन की वार्ता	सम्पा० श्री द्वारकादास परिख ।	कांकरोली
१६	छन्द: प्रभाकर	श्री जगन्नाथ प्रसाद भानु	
१७	ठाकुर - ठसक	सम्पा० लाला भगवान दीन	
१८	दान-लीला (टीका)	श्री जवाहरलाल चतुर्वेदी	साहित्य सेवा सदन, काशी
१९	देव और उनकी कविता	डा० नगेन्द्र	गौतम बुक डिपो, दिल्ली
२०	दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता	सम्पा० श्री द्वारकादास परिख	कांकरोली ।
२१	धोलपद	एक वैष्णव	नाथद्वारा ।
२२	परमानन्द सागर	सम्पा० डा० गोवर्द्धन नाथ शुक्ल	अग्रवाल प्रेस, मथुरा ।
२३	प्राचीन वार्ता रहस्य (भाग-१,२,३)	सम्पा० पो० कण्ठमणि शास्त्री	कांकरोली
२४	भक्त कवि व्यास जी	श्री वासुदेव गोस्वामी	अग्रवाल प्रेस, मथुरा ।
२५	मध्य कालीन काव्य में राग और रस ।	डा० दिनेशचन्द्र गुप्त	
२६	मध्यकालीन कृष्ण काव्य	श्री कृष्णदेव झारी	हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली ।
२७	मध्यकालीन हिन्दी-गद्य	श्री हरिमोहन श्रीवास्तव	
२८	मध्यकालीन हिन्दी काव्य में भारतीय संस्कृति	डा० मदन गोपाल गुप्त	नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली ।
२९-	व्रजभाषा के कृष्ण भक्ति काव्य में अभिव्यंजना शिल्प	डा० सावित्री सिन्हा	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	लेखक या सम्पादक	अन्य विवरण
३०	वर्षोत्सव, (भाग-१,२)	सम्पा० लल्लूभाई छगनलाल देसाई ।	अहमदाबाद
३१	वार्ता-साहित्य एक वृहद् अध्ययन ।	डा० हरिहरनाथ टंडन	भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़ ।
३२	वाङ्मय-विमर्श	डा० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	
३३	विहारी का नया मूल्यांकन	डा० बच्चनसिंह	हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी
३४	संत साहित्य और साधना	डा० भुवनेश्वर मिश्र 'माधव'	प्रथम संस्करण
३५	श्रीनाथ जी की प्राकट्य वार्ता	गो० हरिराय जी	नाथद्वारा
३६	श्री गिरधरलाल जी के १२० वचनामृत	गो० गिरधरलाल जी	लेखक के निजी संग्रह से ।
३७	श्री गोपिकालंकार मट्टू जी के३२ वचनामृत तथा पद संग्रह	गो० मट्टू जी महाराज	वही ।
३८	श्री वल्लभ वंश-वृक्ष	सम्पा० श्री ब्रजभूषण शर्मा	कांकरोली
३९	श्री वल्लभ-विलास	सम्पा० बाबू ब्रजभूषनदास	लेखक के निजी संग्रह से
४०	सूरसागर और भगवद्भक्ति	डा० मुंशीलाल शर्मा	साहित्य भवन, इलाहाबाद ।
४१	सूरदास (जीवनी और काव्य का अध्ययन) ।	डा० व्रजेश्वर वर्मा	हि० परिषद् वि०वि०,प्रयाग ।
४२	सूर की भाषा	डा० प्रेमनारायन टंडन	हिन्दी साहित्य भंडार,लखनऊ ।
४३	सूरदास की वार्ता	सम्पा० श्रीप्रभुदयाल मीतल	अग्रवाल प्रेस,मथुरा ।

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	लेखक या सम्पादक	अन्य विवरण
४४	सूर पूर्व व्रजभाषा और उसका साहित्य	डा० शिवप्रसाद सिंह	प्रथम-संस्करण ।
४५	सूर और उनका साहित्य	डा० हरवंशलाल शर्मा	भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़ ।
४६	सूर-निर्णय	श्री द्वारकादास परिख एवं श्री प्रभुदयाल मीतल	अग्रवाल प्रेस, मथुरा ।
४७	सूर-मीमांसा	डा० ब्रजेश्वर वर्मा	ओरियन्टल बुक डिपो, दिल्ली ।
४८	सूर-सागर (भाग-१,२)	सम्पा० नंद दुलारे बाजपेयी ।	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
४९	सेवक-वाणी	सेवक	
५०	हवेली परम्परा	श्री ब्रजराय जी महाराज	अहमदाबाद ।
५१	हिन्दी काव्य में श्रृंगार काव्य परम्परा और महाकवि विहारी	डा० गणपति चन्द्र गुप्त	
५२	हिन्दी का समस्यापूर्ति काव्य	डा० दयाशंकर शुक्ल	गंगा ग्रन्थमाला कार्यालय, लखनऊ ।
५३	हिन्दी नाटकों में अभिनय-तत्त्व	डा० ब्रजवल्लभ मिश्र	शोध-प्रबंध, राज० वि०वि०, जयपुर ।
५४	हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास	श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय	
५५	हिन्दी वाङ्मय का विकास	डा० सत्यदेव चौधरी	
५६	हिन्दी-साहित्य	डा० राम रतन भटनागर	
५७	हिन्दी साहित्य को गुजरात के संतों की देन	डा० रामकुमार गुप्त	
५८	हिन्दी वैष्णव साहित्य में रस-परिकल्पना	डा० प्रेम स्वरूप	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली ।

इ ति हा स - ग्र न्थ

क्रमांक	नाम ग्रन्थ	लेखक या सम्पादक	अन्य विवरण
१	भारत वर्ष का इतिहास	डा० ईश्वरी प्रसाद	
२	भारत वर्ष का इतिहास	भाई परमानन्द	
३	भारतीय संस्कृति की कहानी	डा० भगवत्सरण उपाध्याय	
४	भारतीय संस्कृति का उत्थान	डा० रामजी उपाध्याय	
५	मराठों का इतिहास	ग्रान्ट डफ, अनुवादक श्री लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	
६	मिश्रबन्धु विनोद	मिश्रबन्धु	
७	मुगल शासन-पद्धति	सर जदुनाथ सरकार अनुवादक विजय नरायन चौबे ।	
८	ब्रज का इतिहास (भाग-१,२)	श्रीकृष्ण दत्त बाजपेयी ।	
९	ब्रज का इतिहास	श्री प्रभुदयाल मीतल	
१०	वीर विनोद	कविराज स्यामल दास	
११	सम्प्रदाय कल्पद्रुम	विट्ठलनाथ भट्ट	
१२	संस्कृति के चार अध्याय	श्री रामधारीसिंह 'दिनकर'	
१३	हिन्दी साहित्य	सम्पा० डा० धीरेन्द्र वर्मा ।	द्वितीय खण्ड
१४	हिन्दी-साहित्य का आदिकाल	डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी ।	बिहार राष्ट्र भाषा परि० पटना ।
१५	हिन्दी साहित्य का इतिहास ।	आ० रामचन्द्र शुक्ल	ना०प्र०सभा, काशी ।
१६	हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास (भाग-६)	डा० नगेन्द्र	वही ।

क्रमांक	नाम ग्रन्थ	लेखक या सम्पादक	अन्य विवरण
१७-	हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास (निर्गुण-भक्ति) भाग-४	पं० परशुराम चतुर्वेदी	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
१८-	हिन्दुई साहित्य का इतिहास	ग्रान्ट डफ, अनुवादक लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	हिन्दुस्तानी ऐकेडेमी, उ०प्र०, इलाहाबाद ।

कोश-ग्रन्थ

१-	हिन्दी साहित्य कोश	सम्पा० धीरेन्द्र वर्मा	

पत्रिका

१-	भारतीय संस्कृति	डा० गोविन्ददास	
२-	हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का त्रै-वार्षिक विवरण		नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
३-	सरस्वती	अप्रैल, १९७२	

संस्कृत-ग्रन्थ

१-	अभिनव भारती	आ० अभिनव गुप्त	
२-	कृष्णाश्रय	महाप्रभु वल्लभाचार्य	
३-	काव्य प्रकाश	मम्मट, अनुवादक श्री विश्वेश्वर ।	
४-	काव्य-मीमांसा	राजशेखर अनु० पं० केदारनाथ शर्मा	बिहार राष्ट्र-भाषा परि०, पटना ।
५-	दस श्लोकी	निम्बार्काचार्य	

क्रमांक	नाम-ग्रन्थ	लेखक या सम्पादक	अन्य विवरण
६-	नाट्य शास्त्र	आचार्य भरत	
७-	भक्ति रसायन	मधुसूदन सरस्वती	
८-	मार्गस्वरूप निर्णय	गो० हरिराय जी	
९-	साहित्य दर्पण	आचार्य विश्वनाथ	
१०-	शिक्षा पत्र	गो० हरिराय जी	
११-	हरिभक्त रसामृत सिंधु	रूप गोस्वामी	
१२-	हरिराय वाइ मुक्तावलि	गो० हरिराय जी	

गुजराती

१- गोस्वामी हरिराय जी महाप्रभु नूं जीवन-चरित्र	सम्पा० श्री व्दारका दास परिख	
२- गोस्वामी हरिराय जी महाप्रभु जी नूं जीवन-दर्शन (भाग-१,२)	एक वैष्णव	प्रकाशन, सावली ।
३- श्री हरिराय जी नूं आख्यान	वही ।	

अंग्रेजी

१-	दी हिष्ट्री आफ मुस्लिम रूल इन इंडिया	डा० ईश्वरी प्रसाद माहेश्वरी ।
२-	दी हिष्ट्री आफ मैडियूअल इंडिया	डा० ईश्वरी प्रसाद माहेश्वरी
३-	दी स्टेट एन्ड रिलीजन इन मुगल इंडिया	डा० एम० एल० राय चौधरी ।

भेंट - वार्ता

१- आचार्य जवाहर लाल चतुर्वेदी	दिनांक- १०-८-७२
२- श्री प्रभुदयाल जी मीतल	,, २९-३-७३
३- श्री रतनलाल गोस्वामी	,, ३-११-७०
४- श्री ब्रजभूषण लाल जी महाराज	प्राय:
५- श्री ब्रजेशकुमार जी	प्राय:
६- श्री गोविन्द लाल जी महाराज तिलकायत, नाथद्वारा	नवम्बर, १९७१
७- लाला भगवान दास जी नाथद्वारा वाले	नवम्बर, १९७१